एम॰ ए॰ हिन्दी I सेमेस्टर

डा॰ अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कालेज
आरा।

आदिकाल (पृथ्वीराज रासो)

प्रथम पत्र

प्रश्न : पृथ्वीराज रासो की प्रमाणिकता पर विचार कीजिए।

उत्तर

'पृथ्वीराज रासो' प्रमाणिक ग्रंथ है या अप्रमाणिक, इस विषय पर बड़ा ~~विवाद~~ विवाद है। यह ग्रंथ चंदबरदाई द्वारा रचित है। चंदबरदाई हिन्दी के आदि कवि माने जाते हैं। पृथ्वीराज रासो उनका प्रथम ग्रंथ है। यह 69 सर्गों में विभक्त है, इसमें ढाई हजार से ज्यादा पृष्ठ हैं। इस ग्रंथ में कहीं-कहीं ऐसी बातें कही गयी हैं जो इतिहास की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है। किंतु उसका अर्थ यह नहीं कि यह संपूर्ण ग्रंथ ही भ्रमपूर्ण है। इस ग्रंथ में उच्च कोटि के कवित्व एवं महाकाव्य के सारे लक्षण मिलते हैं इसलिए इस ग्रंथ की प्रमाणिकता के संदर्भ में विभिन्न विचारों की जाँच जरूरी है। इस संबंध में उन विचारों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है —

1. कुछ विद्वान रासो को प्रमाणिक ग्रंथ मानते हैं और उसमें आई बातों का समर्थन करते हैं। उनके मतानुसार रासो ग्रंथ बिलकुल मौलिक है। चंदबरदाई के वर्णनों से यह स्पष्ट है कि वह पृथ्वीराज ~~चौहान~~ का समकालीन कवि था।

2. कुछ विद्वानों के अनुसार रासो बिलकुल ही अप्रमाणिक ग्रंथ है। उनके मतानुसार चंद नामक कोई भी कवि नहीं हुआ और न ही उसकी रचना की रासो में आई हुयी तिथियाँ और उनकी माता का नाम बिलकुल गलत है।

3. कुछ विद्वानो का कथन है कि चंद नामक का व्यक्ति था और उसने रासो की रचना की थी किंतु वह रासो ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। आज के रासो में बहुत से प्रक्षिप्त अंश हैं, इसलिए इसे प्रमाणिक नहीं माना जा सकता।

4. कुछ विद्वान यह मानते हैं कि चंद नामक व्यक्ति थे किंतु रासो ग्रंथ उसकी रचना नहीं है, यह किसी और चंद नामक कवि की रचना है।

P. T. O

Scanned with CamScanner

इस प्रकार रासो की प्रमाणिकता के संबंध में दो दल बन गए हैं। एक दल रासो को प्रमाणिक मानता है, दूसरा दल अप्रमाणिक।

अब तक रासो की सात प्रतियां प्राप्त हो चुकी हैं। इसमें कहना है कि अमुक प्रति प्रमाणिक है और अमुक प्रति अप्रमाणिक। 'पृथ्वीराज विजय' नामक खंडित प्रति इसके विरोध का कारण है। यह प्रति इतिहास से मिलती है। आलोचकों का कथन है कि रासो का वर्णन पृथ्वीराज रासो से नहीं मिलते हैं, अतः यह अप्रमाणिक है।

'पृथ्वीराज विजय' में पृथ्वीराज की माता का नाम कमलावती है जो पृथ्वीराज के वर्णनों से मेल खाते हैं। मुंशी देवी प्रसाद के शब्दों में पृथ्वीराज के उत्कर्ष साधन के लिए रासोकार ने बहुत से राजाओं के नाम दिये हैं जो अप्रमाणिक हैं। उनके मतानुसार यह पृथ्वीराज की मृत्यु के उपरांत किसी चारण द्वारा लिखे गए ग्रंथ हैं।

डा० रामकुमार वर्मा ने भी रासो काव्य में बहुत सी असंगतियां बताई हैं। जैसे, आबू पहाड़ राजा जेत तथा शलख का होना क्योंकि उस समय आबू पर धारावर्ष परमाल राज्य करता था और उसका उल्लेख कहीं भी नहीं है। रासो में पृथ्वीराज की शक्ति का वर्णन करते हुए गुजरात के राजा भीमसेन का पृथ्वीराज के हाथों मरना दिखलाया गया है, किंतु शिलालेखों के अनुसार वह 1172 ई० तक जीवित रहे। इस प्रकार कपोल-कल्पित और मनमानी कथाएँ रासो में इतनी अधिक है कि वह अविश्वसनीय प्रतीत होता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इसमें तिथियाँ ही अशुद्ध नहीं अपितु घटनाएँ भी अशुद्ध हैं। रासो में पृथ्वीराज का जन्म सं० 1115 गोद जाना 1122 लिखा है, जो इतिहास से मेल नहीं खाता है। भाषा भी इसकी शुद्ध और सुगठित नहीं है। इनके विचार में भाषा की कसौटी पर कसे इस ग्रंथ को कसते हैं तो और भी निराश होना पड़ता है क्योंकि वह बिलकुल बे-ठिकाने है। उसमें व्याकरण

Scanned with CamScanner

की कोई व्यवस्था नहीं।"

डा० श्यामसुंदर दास के मतानुसार यह ग्रंथ अप्रामाणिक है। उन्होंने मुनि जिनविजय जी द्वारा प्राप्त चार रासो विषयक छंदों को प्रमाणिक माना है। उनके विचार से प्रक्षिप्त अंश तो मिल सकते हैं क्योंकि रामायण जैसे ग्रंथ में, जो इतने वर्षों के बाद लिखा गया, उसमें भी क्षेपक अंश पाए जाते हैं। पुराने शिलालेखों में भी रासो का वर्णन मिलता है। रासो ग्रंथ के मामले में इनका स्पष्ट मत है - "पृथ्वीराज रासो समस्त वीरगाथा काल की सबसे अधिक महत्वपूर्ण रचना है। उस काल की जितनी स्पष्ट झलक पायी जाती है उतनी अन्य ग्रंथों में नहीं।" उन्होंने आगे लिखा क्षेपक वास्तव में भ्रांतियों के कारण हैं। इस प्रकार के क्षेपक तो अन्य काव्यों में पाया जाता है। नागरी प्रचारिणी ने इसकी प्रमाणिकता के विषय में कुछ परवाने प्रकाशित किए थे उनको भी झुठलाया नहीं जा सकता। रहा अरबी-फारसी शब्दों का प्रश्न तो उनके विषय में संदेह नहीं होना चाहिए। मोहम्मद गोरी का भारत पर आक्रमण और महमूद गजनवी का लूटपाट इसी के आस-पास हुआ था। चंद लाहौर निवासी था अतः बचपन से ही उनके मस्तिष्क में ऐसे शब्द प्रवेश करते गए। इस कारण चंद की भाषा में अरबी-फारसी का होना कोई अचरज की बात नहीं है।

ऐतिहासिक विषयों के हैं भ्रांतियों के संबंध में मिश्र बंधुओं का कथन है कि रासो ऐतिहासिक ग्रंथ न होकर काव्य-ग्रंथ है। अतः कवि ने इसमें अपनी कल्पना का महत्वपूर्ण समावेश किया है। चंद का उद्देश्य था - अपने राजा के शौर्य का वर्णन करना और उसके लिए उसने अपनी कल्पना का आधार लिया"

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या का कहना है कि इसकी तिथि की प्रमाणिकता के विषय में राजपूत महानंद के वंश के 90 वर्ष के शासन काल को क्षत्रिय शासन काल नहीं गिनते अतः रासो में 90 वर्ष घटाकर संवत् लिखा गया

रासो समर्थकों का कथन समीचीन प्रतीत होता है कि रासो ग्रंथ की रचना चंदबरदायी ने ही की है जो जो राजा पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे। यह तो अकाट्य सत्य है कि उसके पक्ष की तुलना में इसके विरोधी मत अधिक पाए जाते हैं किन्तु कहना यह है कि चंद ने जिस ग्रंथ की रचना की यह बात समाज में इतना प्रसिद्ध है कि सहसा इस बात को कोई स्वीकार नहीं कर सकता कि यह प्रमाणिक ग्रंथ नहीं है। इतिहास पृथ्वीराज का बंदी होना तथा चंद द्वारा शहाबुद्दीन की मृत्यु असंगत बताना, ये सब वर्णन चंद ने ही नहीं किए, उनके पुत्र ने उनके द्वारा छोड़े गए अधूरे ग्रंथ को पूरा किया था। जल्हण एक अपने आश्रयदाता का वध एक आततायी के हाथों दिखाना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने चंद के हाथों उनकी मृत्यु दिखलाने का प्रयास किया। इसमें राष्ट्र के सम्मान की भावना छिपी हुई है

यह निर्विवाद सत्य है कि रासो एक उच्च कोटि का ग्रंथ है, उसकी प्रमाणिकता निर्संदेह है। इस विषय में आलोचकों को और खोज करने की आवश्यकता है जिससे इस पर अप्रमाणिक होने के संदेह को मिटाया जा सके।